Psalm 74— Logotechnical Analysis

Guidelines

- Please read the <u>General Introduction</u> as well as the Introduction to <u>Book I</u> and <u>Book III</u>.
- For common features found in the numerical analysis charts, see the "Key to the charts".

Specific features of Psalm 74

- Psalm 74 and Psalm 73 have several features in common. Both have a short introductory strophe, v. 1. Both have two cantos (vs. 1-12 and 13-23), each of which has its own meaningful centre on verseline level. And in both psalms the name YHWH occurs only once and has a distinct function. This is also the case in Psalm 75.
- The meaningful centre of the entire psalm is v. 12. The distinct meaningful centres of the two cantos, v. 7 and v. 18, are remarkably alike. Particularly ingenious is the way in which these three centres are highlighted by focussing devices: first, the use of the 3rd person form to highlight v. 12, second, the use of the single occurrence of the name YHWH to emphasize the meaningful centre of Canto II, v. 18, and third, the use of the keyword (), 'your name', to link v. 18 with v. 7, the meaningful centre of Canto I.
- In terms of content, the psalm divides into two parts, a division which overlies the proposed canto structure (vs. 1-12 and 13-23):

vs. 1-9, supplication and lamentation, with 74 words (Column d),

vs. 10-23, praise and the prayer for deliverance, with 119 (7 x 17) words (Column c).

Strophic structure - Canto/Stanza boundary: || Canticle boundary: |

- Van der Lugt: 1-2, 3-4, 5-6, 7-9 || 10-12, 13-15, 16-17 || 18-19, 20-21, 22-23 (3 cantos with 10 strophes, 23 verselines and 48 cola).
- Fokkelman: 1-3, 4-5 || 6-7, 8-9, 10-11 || 12-13, 14-15, 16-17 || 18-19, 20-21, 22-23 (4 stanzas with 11 strophes, 23 verselines and 49 cola, taking v. 20 as a tricolon).
- Labuschagne: 1, 2-3, 4-6 | 7-9 | 10-12 || 13-15, 16-17 | 18-19, 20-21, 22-23 (2 cantos with 5 Canticles, 10 strophes, 23 verselines and 49 cola, taking v. 20 as a tricolon).

Logotechnical analysis

- Columns **a** and **b** show the number of words before and after the atnach.
- Column c: praise and the prayer for deliverance; d: supplication and lamentation.
- The numbering of the verselines is in brown.

| | | | Total | а | b | C | d |
|---|--|---|----------|------|-----|-----|----------|
| 1 | נזשְׂכִּיל לְאָסָף Heading | | 2 | 2 | | | |
| | לָמָה <mark>אֱלֹהִים</mark> זָנַחְתָּ לָנָצַח^ | 1 | 4 | 4 | | | 4 |
| | : יֶּעְשֵׁן אַפְּדָ בְּצֹאֹן מַרְעִיתֶד | | 4 | | 4 | | 4 |
| | Strophe 1 Total, v. 1 | | 8 | = 4 | + 4 | = 0 | + 8 |
| 2 | זְכֹר אֲדָתְדָ קָנִיתָ מֶדֶם | 2 | 4 | 4 | | | 4 |
| | נּאַלְשׁ שֵׁכָּמ דַוֹזַלָשָׁע | | 3 | 3 | | | 3 |
| | ײַר־אַיּוֹן זֶה שֶׁכַנְתָּ בּוֹ: | | <u>5</u> | | 5 | | <u>5</u> |
| | Total, v. 2 | | 12 | = 7 | + 5 | = 0 | + 12 |
| 3 | הָרִימָה פְּעָמֶידְ לְמַשֶׁאוֹת נָצַח^ | 3 | 4 | 4 | | | 4 |
| | ּכָּל־הַרַע אוֹיֵב בַּקֹּדָשׁ: | | <u>4</u> | | 4 | | 4 |
| | Total, v. 3 | | 8 | = 4 | + 4 | = 0 | + 8 |
| | Strophe 2 Total, v. 2-3 | | 20 | = 11 | + 9 | = 0 | + 20 |

| 4 | שֶׁאֲגוּ צִׁרְרֶיהַ בְּקֶרֶב מוֹצֵרֶהַ^ | 4 | 4 | 4 | | | 4 |
|-------------------|--|----|-----------|------|------|------|-------------|
| | שָׁמוּ אוֹתֹתָם אֹתוֹת: | | 3 | | 3 | | 3 |
| | Total, v. 4 | | 7 | = 4 | + 3 | = 0 | + 7 |
| 5 | יוָדַע כּמֵבִיא לְמָעָלָה^ | 5 | 3 | 3 | | | 3 |
| | בּסֲבָהְ־עֵץ קַרְהָמוֹת: | | 3 | | 3 | | 3 |
| | Total, v. 5 | | 6 | = 3 | + 3 | = 0 | + 6 |
| 6 <mark>*</mark> | <mark>וְעַתֵּה</mark> פְּתּוּהֵיהַ יַּחַד^ | 6 | 3 | 3 | | - | 3 |
| | בְּכַשִּׁיל וְכֵילַפֹּת יַהֲלֹמוּן: | | 3 | | 3 | | 3 |
| | Total, v. 6 | | 6 | = 3 | + 3 | = 0 | + 6 |
| | Strophe 3 Total, v. 4-6 | | | = 10 | + 9 | | + 19 |
| | Canticle I.1 Total, v. 1-6 | | 47 | = 25 | + 22 | = 0 | + 47 |
| 7 | Middle words אַקְרָשֶׁקָ מִקְרָשֶׁק | 7 | 3 | 3 | | | 3 |
| | of Canto I: בָּאָרֶץ חַלְּלוּ מִשְׁכַן־שְׁמֶךּ | | 4 | | 4 | | 4 |
| | 97 = 47 + 3 + 47 Total, v. 7 | | 7 | = 3 | + 4 | = 0 | + 7 |
| | Total, v. 4-7 | | _ | = 13 | | = 0 | + 26 |
| | Total, v. 3-7 | | 34 | = 17 | + 17 | = 0 | + 34 |
| | Total, v. 1-7 | | 54 | = 28 | + 26 | = 0 | + 54 |
| 8 | אָמְרוּ בְלִבֶּם נִינָם יָחַר^ | 8 | 4 | 4 | | | 4 |
| | שָּׂרְפּוּ כָל־מוֹעֲדִי־אָל בָּאָרֶץ: | | 5 | | 5 | | <u>5</u> |
| | Total, v. 8 | | 9 | = 4 | + 5 | = 0 | + 9 |
| 9 | אותתינו לא רָאִינוּ | 9 | 3 | 3 | | | 3 |
| | אַין־עוֹד נָבִיאי∕ | | 3 | 3 | | | 3 |
| | וְלֹאׁ־אִתְנוּ יֹדֵעַ עַד־מָה: | | 5 | | 5 | | <u>5</u> |
| | Total, v. 9 | | <u>11</u> | = 6 | + 5 | = 0 | + 11 |
| | Canticle I.2 Strophe 4 Total, v. 7-9 | | <u>27</u> | = 13 | + 14 | = 0 | + 27 |
| | Total, v. 2-9 | | <u>66</u> | = 34 | + 32 | = 0 | + <u>66</u> |
| | Total, v. 1-9 | | 74 | = 38 | + 36 | = 0 | + 74 |
| 10 | אַר־מָתַי אֶלֹהִים יְחָגֶרף צָר^ | 10 | 5 | 5 | | 5 | |
| | ַיָנָאָץ אוֹיֵב שִׁמְדָ לֶנָצַח: | | 4 | | 4 | 4 | |
| | Total, v. 10 | | 9 | = 5 | + 4 | = 9 | + 0 |
| 11 <mark>*</mark> | לַמָּה תָשִׁיב יָדְד וִימִיגָדָ^ | 11 | 4 | 4 | | 4 | |
| | מִפֶּרֶב <mark>חֵיקְה</mark> ָ כַּצֵּׂה: | | <u>3</u> | | 3 | 3 | |
| | Total, v. 11 | | 7 | = 4 | + 3 | = 7 | + 0 |
| | ddle colon: 24+1+24 <u>ואלהים מַלְכִּי מִקֶּרֶם </u> | 12 | 3 | 3 | | 3 | |
| Middle | e word: 96+1)+96: פּאָרָץ ב הָאָרָק ב הָאָרָק | | 4 | | 4 | 4 | |
| Middle | e verseline (3rd person!) Total, v. 12 | | 7 | = 3 | + 4 | = 7 | + 0 |
| | Canticle I.3 Strophe 5 Total, v. 10-12 | | <u>23</u> | | + 12 | | + 0 |
| | Total, v. 9-12 | | <u>34</u> | | | = 23 | + 11 |
| | Canto I Total, v. 1-12 | | 97 | = 50 | + 47 | = 23 | + 74 |

| 13 | י <mark>אַמָּה</mark> פוֹרַרְתָּ בְעָזְדָ יָם^ | 13 | 4 | 4 | | 4 | |
|---------|---|----|-------------------|---------------------|--------------|--------------|------------|
| | שִׁבַּרְתָּ רָאשֵׁי תַנִּינִים עַל־הַמָּוִם: | | 5 | | 5 | 5 | |
| | Total, v. 13 | | 9 | = 4 | + 5 | = 9 | + 0 |
| | Total, v. 8-13 | | <u>52</u> | = 25 | + 27 | = 32 | + 20 |
| 14 | ^אַ מָּה רִצַּצְהָ רָאשֵׁי לְוְיָתָז | 14 | 4 | 4 | | 4 | |
| | תּתְנֵנּוּ מַאֲכָל לְעָם לְצִיִים: | | 4 | | 4 | 4 | |
| | Total, v. 14 | | 8 | = 4 | + 4 | = 8 | + 0 |
| | Total, v. 13-14 | | 17 | = 8 | + 9 | = 17 | + 0 |
| 15 | ^ג אַתָּה בָקַעְתָ מַעְיָן וָנָחַל^ | 15 | 4 | 4 | | 4 | |
| | : אַ קָּה הוֹבַשְׁתָ נַהָרוֹת אָיתָן | | 4 | | 4 | 4 | |
| | Total, v. 15 | | 8 | = 4 | + 4 | = 8 | + 0 |
| | Strophe 6 Total, v. 13-15 | | 25 | = 12 | + 13 | = 25 | + 0 |
| | Total, v. 8-15 | | 68 | = 33 | + 35 | = 48 | + 20 |
| | Total, v. 3-15 | | 102 | = 50 | + 52 | = 48 | + 54 |
| 16 | לָד יוִם אַף-לָד לָיָלָת< | 16 | 5 | 5 | | 5 | |
| | דַכִינוֹת מָאוֹר וָשָׁמֵש: <mark>אַתָּד</mark> הַכִינוֹת מָאוֹר וָשָׁמֵש: | | 4 | | 4 | 4 | |
| | Total, v. 16 | | 9 | = 5 | + 4 | = 9 | + 0 |
| | Numerical, v. 13-14 | | 17 | = 8 | + 9 | = 17 | + 0 |
| | Chiasmus, v. 15-16 | | 17 | = 9 | + 8 | = 17 | |
| | Total, v. <u>13-16</u> | | 34 | = 17 | + 17 | = 34 | + 0 + 0 |
| 17 | ⁶ אַתָּה הִצַּבְתָּ כָּל־גְבוּלוֹת אֶָרֶץ^ | 17 | 5 | 5 | | 5 | |
| | קַיִץ וָהֹרֶף <mark>אַתָּה</mark> יִצַּרְתָּם: | | <u>4</u> | | 4 | 4 | |
| | Total, v. 17 | | 9 | = 5 | + 4 | = 9 | + 0 |
| | Strophe 7 Total, v. 16-17 | | <u>18</u> | = 10 | + 8 | = 18 | + 0 |
| | Total, v. 15-17 | | <u>26</u> | = 12 | + 14 | = 26 | + 0 |
| | Total, v. 14-17 | | <u>34</u> | = 18 | + 16 | = 34 | + 0 |
| | Canticle II.1 Total, v. 13-17 Total, v. 10-17 | | <u>43</u> 66 | = 22 = 34 | + 21 + 32 | = 43 = 66 | + 0 + 0 |
| | Total, v. 10-17 | | 140 | = 34 = 72 | + 68 | = 66 | + 74 |
| 18 Midd | | 10 | 5 | 5 | | 5 | |
| | זְכָר־זאת אויֵב חֵרֵף יְהוָהַ^ lle verseline וַעֵּם נֶבָל נִאֲצוּ שְׁמֵק: 5 + 1 + 5 = 1 = -23: | 10 | <u>4</u> | 0 | 1 | 1 | |
| 0110 | יהנה occurs only here Total, v. 18 | | - 9 | = 5 | + 4 | = 9 | + 0 |
| 19 | אַל־תִּתֵן לְחַיַּת גָפָשׁ תּוֹרֵדְ^ | 19 | 5 | - 5 | 1 7 | - 5 | 1 0 |
| 10 | םית עַנְיֶרָדְ אַל־תִּשְׁבָּד מֹגֶרְן: חַיַּת עַנְיֶרָדְ אַל־תִּשְׁבַּח לַנֵצַח: | 17 | <u>5</u> | Ũ | 5 | 5 | |
| | Total, v. 19 | | | - 5 | | | + 0 |
| | Strophe 8 Total, v. 18-19 | | 19 | = 5 = 10 | + 9 | = 19 | + 0 + 0 |
| 20 | , | 20 | 2 | 2 | | 2 | |
| | בִּי מָלְאוּ מַחֲשֵׁכֵּי־אֶרֶץ | | 4 | | 4 | 4 | |
| | נאות הַמָּס: | | 2 | | 2 | 2 | |
| | Total, v. 20 | | | = 2 | + 6 | = 8 | + 0 |
| | Total, v. 9-20 | | 104 | = 52 | + 52 | = 93 | + 11 |
| 21 | אַל־יָשׁב דֵּךְ נִכְלָם^ | 21 | 4 | 4 | | 4 | |
| | : אָבִיוֹן יְהַלְלוּ שְׁמֶד | | 4 | | 4 | 4 | |
| | Total, v. 21 | | 8 | = 4 | + 4 | = 8 | + 0 |
| | Strophe 9 Total, v. 20-21 | | 16 | = 6 | + 10 | = 16 | + 0 |
| | Total, v. 12-21 | | 85 | = 41 | + 44 | = 85 | + 0 |
| | | | | | | | |

| 22 | בע ניכּבע | קוּמָה <mark>אֱלֹהִים</mark> רִינ | 22 | 4 | 4 | | 4 | |
|----|----------------------|-----------------------------------|----|-------------|------|------|-------|------|
| | -נְבָל כָּל-הַיּוֹם: | זְכֹר חֶרְפָּתְדָ מִנִּי | | <u>6</u> | | 6 | 6 | |
| | | Total, v. 22 | | 10 | = 4 | + 6 | = 10 | + 0 |
| 23 | <u>ڔ</u> ؙڶۯٮڬ؇ | אַל-תִּשְׁכַּח קוֹל צ | 23 | 4 | 4 | | 4 | |
| | רָגִיר : | שָׁאון קָמֶידָ עֹלֶה | | 4 | | 4 | 4 | |
| | | Total, v. 23 | | 8 | = 4 | + 4 | = 8 | + 0 |
| | Strophe 10 | Total, v. 22-23 | | <u>18</u> | = 8 | + 10 | = 18 | + 0 |
| | | Total, v. 21-23 | | <u>26</u> | = 12 | + 14 | = 26 | + 0 |
| | | Total, v. 20-23 | | <u>34</u> | = 14 | + 20 | = 34 | + 0 |
| | Canticle II.2 | Total, v. 18-23 | | <u>53</u> | = 24 | + 29 | = 53 | + 0 |
| | Canto II | Total, v. 13-23 | | <u>96</u> | = 46 | + 50 | = 96 | + 0 |
| | | Total, v. 10-23 | | 1 <u>19</u> | = 58 | + 61 | = 119 | + 0 |
| | | Total, v. 9-23 | | <u>130</u> | = 64 | + 66 | = 119 | + 11 |
| | | Total, v. 1-23 | | <u>193</u> | = 96 | + 97 | = 119 | + 74 |
| | With the I | heading, v. 1-23 | | 195 | = 98 | + 97 | | |

<mark>*</mark> In v. 6a, I follow the Qere reading וְשֵׁתָּה, 'and then', as well as in v. 11b, דֵיקָד, 'your bosom'.

Observations

In terms of the 193 words of the poem, the middle word is Ț, 'the earth', in v. 12b (193 = 96 + 1 + 96). The arithmetic centre falls precisely within the central verseline, v. 12 (23 = 11 + 1 + 11), which constitutes the meaningful centre:

ואלהים מַלְכִּי מִקֶּדֶם ^ פּֿעֵל יְשׁוּעוֹת בְּקֶרֶב הָאָרֶץ

Yes, God is my king from of old // working salvation in the midst of the earth.

The meaningful centre is strongly emphasized by the fact that it refers to God in 3rd person form - the only instance in the poem - which is throughout composed as a prayer addressed to God in 2nd person. For such devices to highlight the meaningful centre, see the <u>General Introduction</u> under "Special devices to highlight the meaningful centre".

2. In terms of content, v. 12 apparently rounds off vs. 1-11 with a concluding statement expressing trust in God and hope for salvation, to constitute Canto I (vs. 1-12). At the same time, it functions as a bridge to the rest of the poem, Canto II (vs. 13-23), which divides into two parts: Canticle II.1 (vs. 13-17), the glorification of YHWH as Creator and Saviour, and the prayer for deliverance, Canticle II.2 (vs. 18-23). My supposition that each of the two sections constitutes a coherent literary unit, is strongly corroborated by the fact that each has a meaningful centre of its own:

That of **Canto I** is constituted by the 3 words of v. 7a (97 = 47 + 3 + 47):

שָׁלָחוּ בַאָשׁ מִקִדַשָּד

They set your sanctuary on fire!

Since the 3-word centre is an integral component of v. 7, the entire verseline may be regarded as the larger meaningful centre of this section:

ָּשִׁלְחוּ <mark>בָאָשׁ</mark> מִקְדָשֶׁדָ לָאָרֶץ חִלְלוּ מִשְׁכֵּן־שְׁמֶדָ:

They set your sanctuary on fire // they utterly desecrated the abode of your name!

My supposition that this is the consciously designed meaningful centre of Canto I gains credibility in light of the similar meaningful centre of Canto II, its central verseline, v. 18(11 = 5 + 1 + 5):

זְכַר־זֹאֹת אוֹיֵב חֵרֵף יִהוָה ^ וִעַם נַבָל נְאָצוּ שְׁמֵדָ

Remember this, YHWH, the enemy scoffed // a foolish people reviled your name!

In the supplicant's appeal to God to take action, this is very meaningful, because it expresses his motivation. What is really at stake is the desecration of God's name. This is skilfully highlighted by the fact that the name ", which appears only here is positioned precisely at the centre of these 9 words! See Observation 5 below.

The explicit reference to God's desecrated name (기여만) - in the heart of Canto II -

clearly alludes to the mention of his reviled name (קמָי) in the heart of Canto I, v. 7.

The function of this keyword is obviously to emphasize the connection between the meaningful centres of the two cantos. It also reverberates in Ps. 75:2b and 76:2b, which strongly suggests common authorship for at least Pss. 74-76.

3. The unity of Canticle II.1, vs. 13-17, is underscored by the fact that it is made up of 43 words divided into 17 in 13-14 (God's victory over the forces of chaos and evil) and 26 in 15-17 (God's care for the earth). It is additionally reinforced by the use of a perfect numerical chiasmus that ties vs. 13-14 and 15-16 together - see the chart. And finally, the 7 occurrences of the personal pronoun ans, 'you', in Canticle II.1 not

only emphasize the fullness of YHWH's intervention in history, but also buttress the literary unity of the passage.

The use of the 2nd person personal pronoun in a series of **7** (menorah pattern) is very reminiscent of the similar use of the 2^{nd} person pronominal suffix in Psalm 8. See Observation 4 in my Analysis of Psalm 8, and compare the 3-word meaningful centre of Psalm 76, אָקָה נוֹרָא אָקָה, You, awesome You!

4. The divine name numbers are woven into the fabric of the text as follows:

| vs. 4-7 | 26 words in total |
|-----------|---|
| vs. 3-7 | 34 words in total, with 17 before, and 17 after atnach |
| vs. 9-12 | 34 words in total, with 17 before, and 17 after atnach |
| vs. 2-9 | 34 (2 x 17) words before atnach |
| vs. 8-13 | 52 (2 x 26) words in total |
| vs. 8-15 | 68 (4 x 17) words in total |
| vs. 3-15 | 102 (6 x 17) words in total, with 52 (2 x 26) after atnach |
| vs. 13-14 | 17 words in total |
| vs. 13-16 | 34 words in total, with 17 before, and 17 after atnach |
| vs. 15-16 | 17 words in total |
| vs. 14-17 | 34 (2 x 17) words in total |
| vs. 10-17 | 34 (2 x 17) words before atnach |
| vs. 1-17 | 68 (4 x 17) words after atnach |
| vs. 9-20 | 104 (4 x 26) words in total, with 52 before and 52 after atnach |
| vs. 12-21 | 85 (5 x 17) words in total |
| vs. 21-23 | 26 words in total |
| vs. 20-23 | 34 (2 x 17) words in total |
| vs. 10-23 | 119 (7 x 17) words in total |
| vs. 9-23 | 130 (5 x 26) words in total. |

The word ההה סכביים occurs 4 times, and אל once (v. 8b), while the name ההה features only once (v. 18a), right in the middle of the 9-word meaningful centre of Canto II, as a special device highlighting what is really at stake: YHWH's name. See Observation 2 above, and compare Observation 7 in my Analysis of <u>Psalm 75</u> for a similar highlighting function of the single occurrence of the Name there.

© 2008 Dr. C.J. Labuschagne Brinkhorst 44 9751 AT Haren (Gron) The Netherlands Iabuschagne.cj@planet.nl